

विकिपीडिया

# देवनागरी

मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया से

**री**

\_\_\_\_\_

### • अंतर्निहित स्वर

[illegible]

3%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A4%B0%E0%A5%80\_%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%87%E0%A4%A1%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%B0&action=edit)

**देवनागरी** एक लिपि है जिसमें अनेक भारतीय भाषाएँ तथा कई विदेशी भाषाएँ लिखी जाती हैं। देवनागरी बायें से दायें लिखी जाती है, इसकी पहचान एक कैलित रेखा से है जिसे 'शिरिरेखा' कहते हैं। संस्कृत, पालि, हिन्दी, मराठी, कोंकणी, सिन्धी, कश्मीरी, डोगरी, नेपाली, नेपाल भाषा (तथा अन्य नेपालीलीप्यभाषाएँ), तामाङ भाषा, गढ़वाली, बोडो, अंगिका, मगही, भोजपुरी, मैथिली, संथाली आदि भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ स्थितिओं में गुजराती, पंजाबी, बिष्णुपुरिया मणिपुरी, रोमानी और उर्दू भाषाएँ भी देवनागरी में लिखी जाती हैं। देवनागरी विश्व में सबसे प्रयुक्त लिपियों में से एक है।

## અનુક્રમ

## परिचय

### देवनागरी' शब्द की व्युत्पत्ति

## इतिहास

भाषाविज्ञान की दृष्टि से देवनागरी

## देवनागरी वर्णमाला

स्वर

व्यंजन

### नक्ता वाले व्यंजन

विराम-चिह्न, वैदिक चिह्न आदि

देवनागरी अंक

देवनागरी संयुक्ताक्षर

## पुरानी देवनागरी

## देवनागरी लिपि के गुण

## देवनागरी लिपि के दोष

## देवनागरी पर महापुरुषों के विचार

### भारत के लिये देवनागरी का महत्व

विश्वलिपि के रूप में देवनागरी

## लिपि-विहीन भाषाओं के लिये देवनागरी

## देवनागरी की वैज्ञानिकता

## देवनागरी के सम्पादित व अन्य सॉफ्टवेयर

देवनागरी से अन्य लिपियों में रूपान्तरण

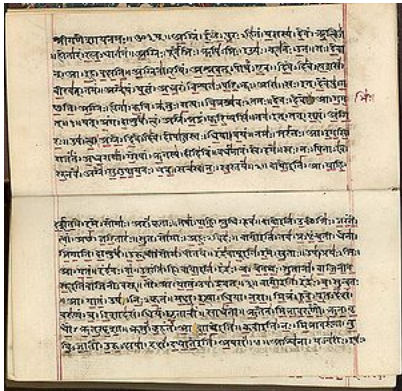
## देवनागरी यूनिकोड

कम्प्यूटर कंजीपटल पर देवनागरी

## सन्दर्भ

इन्हें भी देखें

## बाहरी कड़ियाँ



देवनागरी में लिखी ऋग्वेद की पाण्डुलिपि

॥ जेष्ठतुलाकाशुद्धविषासनात् ॥  
पीतशंश्रीवेद्यनाशकवर्षात्सुदुविषपात्रात्तद्वर्षी  
मायगाढविरुविज्ज् ॥



मेलबर्न ऑस्ट्रेलिया की एक ट्राम पर  
देवनागरी लिपि

**परिचय**

अधिकतर भाषाओं की तरह देवनागरी भी बायें से दायें लिखी जाती है। प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खिंची होती है (कुछ वर्णों के ऊपर रेखा नहीं होती है) इसे शिरोरेखा कहते हैं। इसका विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो प्रचलित लिपियाँ (रोमन, अरबी, चीनी आदि) में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। इससे वैज्ञानिक और व्यापक लिपि शायद केवल अध्व लिपि है। भारत की कई लिपियाँ देवनागरी से बहुत अधिक मिलती-जुलती हैं, जैसे- बांग्ला, गुजराती, गुरुमुखी आदि। कम्प्यूटर प्रोग्रामों की सहायता से भारतीय लिपियों को परस्पर परिवर्तन बहुत आसान हो गया है।

भारतीय भाषाओं के किसी भी शब्द या ध्वनि को देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है और फिर लिखे पाठ को लगभग हू-ब-हू उच्चारण किया जा सकता है, जो कि रोमन लिपि और अन्य कई लिपियों में सम्भव नहीं है, जब तक कि उनका विशेष मानकीकरण न किया जाये, जैसे आइट्रांस या आइएएसटी।

इसमें कुल ५२ अक्षर हैं, जिसमें १४ स्वर और ३८ व्यंजन हैं। अक्षरों की क्रम व्यवस्था (विन्यास) भी बहुत ही वैज्ञानिक है। स्वर-व्यंजन, कोमल-कठोर, अल्पप्राण-महाप्राण, अनुनासिक्य-अन्तस्थ-उष्म इत्यादि वर्गीकरण भी वैज्ञानिक हैं। एक मत के अनुसार देवनागर (काशी) में प्रचलन के कारण इसका नाम देवनागरी पड़ा।

भारत तथा एशिया की अनेक लिपियों के संकेत देवनागरी से अलग हैं पर उच्चारण व वर्ण-क्रम आदि देवनागरी के ही समान हैं, क्योंकि वे सभी ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न हुई हैं (उर्दू को छोड़कर)। इसलिए इन लिपियों को परस्पर आसानी से लिप्यन्तरित किया जा सकता है। देवनागरी लेखन की दृष्टि से सरल, सौन्दर्य की दृष्टि से सुन्दर और वाचन की दृष्टि से सुपाठ्य है।

भारतीय अंकों को उनकी वैज्ञानिकता के कारण विश्व ने सहर्ष स्वीकार कर लिया है।

## देवनागरी' शब्द की व्युत्पत्ति

देवनागरी या नागरी नाम का प्रयोग "क्यों" प्रारम्भ हुआ और इसका व्युत्पत्तिपरक प्रवृत्तिनिमित्त क्या था- यह अब तक पूर्णतः निश्चित नहीं है।

(क) 'नागर' अपभ्रंश या गुजराती "नागर" ब्राह्मणों से उसका संबंध बताया गया है। पर दृढ़ प्रमाण के अभाव में यह मत संदिग्ध है।

(ख) दक्षिण में इसका प्राचीन नाम "नंदिनागरी" था। हो सकता है "नंदिनागर" कोई स्थानसूचक हो और इस लिपि का उससे कुछ संबंध रहा हो।

(ग) यह भी हो सकता है कि "नागर" जन इसमें लिखा करते थे, अतः "नागरी" अभिधान पड़ा और जब संस्कृत के ग्रंथ भी इसमें लिखे जाने लगे तब "देवनागरी" भी कहा गया।

ब्राह्मी	
ब्राह्मी तथा उससे व्युत्पन्न लिपियाँ	
उत्तरी ब्राह्मी	<span>[दिखाएँ]</span>
दक्षिणी ब्राह्मी	<span>[दिखाएँ]</span>
<span>𑀧𑁆𑀭𑀸𑀓𑀾𑀢𑀺𑀶𑀦𑀺𑀣𑀲𑀺𑀬𑀺𑀤𑀺𑀡𑀺𑀮𑀺𑀱𑀺𑀥𑀺𑀭𑀺𑀴𑀺𑀢𑀺𑀰𑀺𑀣𑀺𑀚𑀺𑀘𑀺𑀙𑀺𑀛𑀺𑀜𑀺𑀝𑀺𑀞𑀺𑀟𑀺𑀠𑀺𑀡𑀺𑀢𑀺𑀣𑀺𑀤𑀺𑀥𑀺𑀦𑀺𑀧𑀺𑀨𑀺𑀩𑀺𑀪𑀺𑀫𑀺𑀬𑀺𑀭𑀺𑀮𑀺𑀯𑀺𑀰𑀺𑀱𑀺𑀲𑀺𑀳𑀺𑀴𑀺𑀵𑀺𑀶𑀺𑀷𑀺𑀸𑀺𑀹𑀺𑀻𑀼𑀽𑀾𑀿𑁆𑁇𑁈𑁉𑁊𑁋𑁌𑁍𑁎𑁏𑁐𑁑𑁒𑁓𑁔𑁕𑁖𑁗𑁘𑁙𑁚𑁛𑁜𑁝𑁞𑁟𑁠𑁡𑁢𑁣𑁤𑁥𑁦𑁧𑁨𑁩𑁪𑁫𑁬𑁭𑁮𑁯𑁰𑁱𑁲𑁳𑁴𑁵𑁶𑁷𑁸𑁹𑁺𑁻𑁼𑁽𑁾𑁿𑂀𑂁𑂂𑂃𑂄𑂅𑂆𑂇𑂈𑂉𑂊𑂋𑂌𑂍𑂎𑂏𑂐𑂑𑂒𑂓𑂔𑂕𑂖𑂗𑂘𑂙𑂚𑂛𑂜𑂝𑂞𑂟𑂠𑂡𑂢𑂣𑂤𑂥𑂦𑂧𑂨𑂩𑂪𑂫𑂬𑂭𑂮𑂯𑂰𑂱𑂲𑂳𑂴𑂵𑂶𑂷𑂸𑂺𑂹𑂻𑂼𑂽𑂾𑂿𑃀𑃁𑃂𑃃𑃄𑃅𑃆𑃇𑃈𑃉𑃊𑃋𑃌𑃍𑃎𑃏𑃐𑃑𑃒𑃓𑃔𑃕𑃖𑃗𑃘𑃙𑃚𑃛𑃜𑃝𑃞𑃟𑃠𑃡𑃢𑃣𑃤𑃥𑃦𑃧𑃨𑃩𑃪𑃫𑃬𑃭𑃮𑃯𑃰𑃱𑃲𑃳𑃴𑃵𑃶𑃷𑃸𑃹𑃺𑃻𑃼𑃽𑃾𑃿𑄀𑄁𑄂𑄃𑄄𑄅𑄆𑄇𑄈𑄉𑄊𑄋𑄌𑄍𑄎𑄏𑄐𑄑𑄒𑄓𑄔𑄕𑄖𑄗𑄘𑄙𑄚𑄛𑄜𑄝𑄞𑄟𑄠𑄡𑄢𑄣𑄤𑄥𑄦𑄧𑄨𑄩𑄪𑄫𑄬𑄭𑄮𑄯𑄰𑄱𑄲𑄳𑄴𑄵𑄶𑄷𑄸𑄹𑄺𑄻𑄼𑄽𑄾𑄿𑅀𑅁𑅂𑅃𑅄𑅅𑅆𑅇𑅈𑅉𑅊𑅋𑅌𑅍𑅎𑅏𑅐𑅑𑅒𑅓𑅔𑅕𑅖𑅗𑅘𑅙𑅚𑅛𑅜𑅝𑅞𑅟𑅠𑅡𑅢𑅣𑅤𑅥𑅦𑅧𑅨𑅩𑅪𑅫𑅬𑅭𑅮𑅯𑅰𑅱𑅲𑅳𑅴𑅵𑅶𑅷𑅸𑅹𑅺𑅻𑅼𑅽𑅾𑅿𑆀𑆁𑆂𑆃𑆄𑆅𑆆𑆇𑆈𑆉𑆊𑆋𑆌𑆍𑆎𑆏𑆐𑆑𑆒𑆓𑆔𑆕𑆖𑆗𑆘𑆙𑆚𑆛𑆜𑆝𑆞𑆟𑆠𑆡𑆢𑆣𑆤𑆥𑆦𑆧𑆨𑆩𑆪𑆫𑆬𑆭𑆮𑆯𑆰𑆱𑆲𑆳𑆴𑆵𑆶𑆷𑆸𑆹𑆺𑆻𑆼𑆽𑆾𑆿𑇀𑇁𑇂𑇃𑇄𑇅𑇆𑇇𑇈𑇉𑇊𑇋𑇌𑇍𑇎𑇏𑇐𑇑𑇒𑇓𑇔𑇕𑇖𑇗𑇘𑇙𑇚𑇛𑇜𑇝𑇞𑇟𑇠𑇡𑇢𑇣𑇤𑇥𑇦𑇧𑇨𑇩𑇪𑇫𑇬𑇭𑇮𑇯𑇰𑇱𑇲𑇳𑇴𑇵𑇶𑇷𑇸𑇹𑇺𑇻𑇼𑇽𑇾𑇿𑈀𑈁𑈂𑈃𑈄𑈅𑈆𑈇𑈈𑈉𑈊𑈋𑈌𑈍𑈎𑈏𑈐𑈑𑈒𑈓𑈔𑈕𑈖𑈗𑈘𑈙𑈚𑈛𑈜𑈝𑈞𑈟𑈠𑈡𑈢𑈣𑈤𑈥𑈦𑈧𑈨𑈩𑈪𑈫𑈬𑈭𑈮𑈯𑈰𑈱𑈲𑈳𑈴𑈶𑈵𑈷𑈸𑈹𑈺𑈻𑈼𑈽𑈾𑈿𑉀𑉁𑉂𑉃𑉄𑉅𑉆𑉇𑉈𑉉𑉊𑉋𑉌𑉍𑉎𑉏𑉐𑉑𑉒𑉓𑉔𑉕𑉖𑉗𑉘𑉙𑉚𑉛𑉜𑉝𑉞𑉟𑉠𑉡𑉢𑉣𑉤𑉥𑉦𑉧𑉨𑉩𑉪𑉫𑉬𑉭𑉮𑉯𑉰𑉱𑉲𑉳𑉴𑉵𑉶𑉷𑉸𑉹𑉺𑉻𑉼𑉽𑉾𑉿𑊀𑊁𑊂𑊃𑊄𑊅𑊆𑊇𑊈𑊉𑊊𑊋𑊌𑊍𑊎𑊏𑊐𑊑𑊒𑊓𑊔𑊕𑊖𑊗𑊘𑊙𑊚𑊛𑊜𑊝𑊞𑊟𑊠𑊡𑊢𑊣𑊤𑊥𑊦𑊧𑊨𑊩𑊪𑊫𑊬𑊭𑊮𑊯𑊰𑊱𑊲𑊳𑊴𑊵𑊶𑊷𑊸𑊹𑊺𑊻𑊼𑊽𑊾𑊿𑋀𑋁𑋂𑋃𑋄𑋅𑋆𑋇𑋈𑋉𑋊𑋋𑋌𑋍𑋎𑋏𑋐𑋑𑋒𑋓𑋔𑋕𑋖𑋗𑋘𑋙𑋚𑋛𑋜𑋝𑋞𑋟𑋠𑋡𑋢𑋣𑋤𑋥𑋦𑋧𑋨𑋩𑋪𑋫𑋬𑋭𑋮𑋯𑋰𑋱𑋲𑋳𑋴𑋵𑋶𑋷𑋸𑋹𑋺𑋻𑋼𑋽𑋾𑋿𑌀𑌁𑌂𑌃𑌄𑌅𑌆𑌇𑌈𑌉𑌊𑌋𑌌𑌍𑌎𑌏𑌐𑌑𑌒𑌓𑌔𑌕𑌖𑌗𑌘𑌙𑌚𑌛𑌜𑌝𑌞𑌟𑌠𑌡𑌢𑌣𑌤𑌥𑌦𑌧𑌘𑌩𑌪𑌫𑌬𑌭𑌮𑌯𑌰𑌱𑌲𑌳𑌴𑌵𑌶𑌷𑌸𑌹𑌺𑌻𑌼𑌽𑌾𑌿𑍀𑍁𑍂𑍃𑍄𑍅𑍆𑍇𑍈𑍉𑍊𑍋𑍌𑍍𑍎𑍏𑍐𑍑𑍒𑍓𑍔𑍕𑍖𑍗𑍘𑍙𑍚𑍛𑍜𑍝𑍞𑍟𑍠𑍡𑍢𑍣𑍤𑍥𑍦𑍧𑍨𑍩𑍪𑍫𑍬𑍭𑍮𑍯𑍰𑍱𑍲𑍳𑍴𑍵𑍶𑍷𑍸𑍹𑍺𑍻𑍼𑍽𑍾𑍿𑎀𑎁𑎂𑎃𑎄𑎅𑎆𑎇𑎈𑎉𑎊𑎋𑎌𑎍𑎎𑎏𑎐𑎑𑎒𑎓𑎔𑎕𑎖𑎗𑎘𑎙𑎚𑎛𑎜𑎝𑎞𑎟𑎠𑎡𑎢𑎣𑎤𑎥𑎦𑎧𑎨𑎩𑎪𑎫𑎬𑎭𑎮𑎯𑎰𑎱𑎲𑎳𑎴𑎵𑎶𑎷𑎸𑎹𑎺𑎻𑎼𑎽𑎾𑎿𑏀𑏁𑏂𑏃𑏄𑏅𑏆𑏇𑏈𑏉𑏊𑏋𑏌𑏍𑏎𑏏𑏐𑏑𑏒𑏓𑏔𑏕𑏖𑏗𑏘𑏙𑏚𑏛𑏜𑏝𑏞𑏟𑏠𑏡𑏢𑏣𑏤𑏥𑏦𑏧𑏨𑏩𑏪𑏫𑏬𑏭𑏮𑏯𑏰𑏱𑏲𑏳𑏴𑏵𑏶𑏷𑏸𑏹𑏺𑏻𑏼𑏽𑏾𑏿𑐀𑐁𑐂𑐃𑐄𑐅𑐆𑐇𑐈𑐉𑐊𑐋𑐌𑐍𑐎𑐏𑐐𑐑𑐒𑐓𑐔𑐕𑐖𑐗𑐘𑐙𑐚𑐛𑐜𑐝𑐞𑐟𑐠𑐡𑐢𑐣𑐤𑐥𑐦𑐧𑐨𑐩𑐪𑐫𑐬𑐭𑐮𑐯𑐰𑐱𑐲𑐳𑐴𑐵𑐶𑐷𑐸𑐹𑐺𑐻𑐼𑐽𑐾𑐿𑑀𑑁𑑂𑑃𑑄𑑅𑑆𑑇𑑈𑑉𑑊𑑋𑑌𑑍𑑎𑑏𑑐𑑑𑑒𑑓𑑔𑑕𑑖𑑗𑑘𑑙𑑚𑑛𑑜𑑝𑑞𑑟𑑠𑑡𑑢𑑣𑑤𑑥𑑦𑑧𑑨𑑩𑑪𑑫𑑬𑑭𑑮𑑯𑑰𑑱𑑲𑑳𑑴𑑵𑑶𑑷𑑸𑑹𑑺𑑻𑑼𑑽𑑾𑑿𑒀𑒁𑒂𑒃𑒄𑒅𑒆𑒇𑒈𑒉𑒊𑒋𑒌𑒍𑒎𑒏𑒐𑒑𑒒𑒓𑒔𑒕𑒖𑒗𑒘𑒙𑒚𑒛𑒜𑒝𑒞𑒟𑒠𑒡𑒢𑒣𑒤𑒥𑒦𑒧𑒨𑒩𑒪𑒫𑒬𑒭𑒮𑒯𑒰𑒱𑒲𑒳𑒴𑒵𑒶𑒷𑒸𑒻𑒻𑒼𑒽𑒾𑒿𑓀𑓁𑓃𑓂𑓄𑓅𑓆𑓇𑓈𑓉𑓊𑓋𑓌𑓍𑓎𑓏𑓐𑓑𑓒𑓓𑓔𑓕𑓖𑓗𑓘𑓙𑓚𑓛𑓜𑓝𑓞𑓟𑓠𑓡𑓢𑓣𑓤𑓥𑓦𑓧𑓨𑓩𑓪𑓫𑓬𑓭𑓮𑓯𑓰𑓱𑓲𑓳𑓴𑓵𑓶𑓷𑓸𑓹𑓺𑓻𑓼𑓽𑓾𑓿𑔀𑔁𑔂𑔃𑔄𑔅𑔆𑔇𑔈𑔉𑔊𑔋𑔌𑔍𑔎𑔏𑔐𑔑𑔒𑔓𑔔𑔕𑔖𑔗𑔘𑔙𑔚𑔛𑔜𑔝𑔞𑔟𑔠𑔡𑔢𑔣𑔤𑔥𑔦𑔧𑔨𑔩𑔪𑔫𑔬𑔭𑔮𑔯𑔰𑔱𑔲𑔳𑔴𑔵𑔶𑔷𑔸𑔹𑔺𑔻𑔼𑔽𑔾𑔿𑕀𑕁𑕂𑕃𑕄𑕅𑕆𑕇𑕈𑕉𑕊𑕋𑕌𑕍𑕎𑕏𑕐𑕑𑕒𑕓𑕔𑕕𑕖𑕗𑕘𑕙𑕚𑕛𑕜𑕝𑕞𑕟𑕠𑕡𑕢𑕣𑕤𑕥𑕦𑕧𑕨𑕩𑕪𑕫𑕬𑕭𑕮𑕯𑕰𑕱𑕲𑕳𑕴𑕵𑕶𑕷𑕸𑕹𑕺𑕻𑕼𑕽𑕾𑕿𑖀𑖁𑖂𑖃𑖄𑖅𑖆𑖇𑖈𑖉𑖊𑖋𑖌𑖍𑖎𑖏𑖐𑖑𑖒𑖓𑖔𑖕𑖖𑖗𑖘𑖙𑖚𑖛𑖜𑖝𑖞𑖟𑖠𑖡𑖢𑖣𑖤𑖥𑖦𑖧𑖨𑖩𑖪𑖫𑖬𑖭𑖮𑖯𑖰𑖱𑖲𑖳𑖴𑖵𑖶𑖷𑖸𑖹𑖺𑖻𑖼𑖽𑖾𑗀𑖿𑗁𑗂𑗃𑗄𑗅𑗆𑗇𑗈𑗉𑗊𑗋𑗌𑗍𑗎𑗏𑗐𑗑𑗒𑗓𑗔𑗕𑗖𑗗𑗘𑗙𑗚𑗛𑗜𑗝𑗞𑗟𑗠𑗡𑗢𑗣𑗤𑗥𑗦𑗧𑗨𑗩𑗪𑗫𑗬𑗭𑗮𑗯𑗰𑗱𑗲𑗳𑗴𑗵𑗶𑗷𑗸𑗹𑗺𑗻𑗼𑗽𑗾𑗿𑘀𑘁𑘂𑘃𑘄𑘅𑘆𑘇𑘈𑘉𑘊𑘋𑘌𑘍𑘎𑘏𑘐𑘑𑘒𑘓𑘔𑘕𑘖𑘗𑘘𑘙𑘚𑘛𑘜𑘝𑘞𑘟𑘠𑘡𑘢𑘣𑘤𑘥𑘦𑘧𑘨𑘩𑘪𑘫𑘬𑘭𑘮𑘯𑘰𑘱𑘲𑘳𑘴𑘵𑘶𑘷𑘸𑘹𑘺𑘻𑘼𑘽𑘾𑘿𑙀𑙁𑙂𑙃𑙄𑙅𑙆𑙇𑙈𑙉𑙊𑙋𑙌𑙍𑙎𑙏𑙐𑙑𑙒𑙓𑙔𑙕𑙖𑙗𑙘𑙙𑙚𑙛𑙜𑙝𑙞𑙟𑙠𑙡𑙢𑙣𑙤𑙥𑙦𑙧𑙨𑙩𑙪𑙫𑙬𑙭𑙮𑙯𑙰𑙱𑙲𑙳𑙴𑙵𑙶𑙷𑙸𑙹𑙺𑙻𑙼𑙽𑙾𑙿𑚀𑚁𑚂𑚃𑚄𑚅𑚆𑚇𑚈𑚉𑚊𑚋𑚌𑚍𑚎𑚏𑚐𑚑𑚒𑚓𑚔𑚕𑚖𑚗𑚘𑚙𑚚𑚛𑚜𑚝𑚞𑚟𑚠𑚡𑚢𑚣𑚤𑚥𑚦𑚧𑚨𑚩𑚪𑚫𑚬𑚭𑚮𑚯𑚰𑚱𑚲𑚳𑚴𑚵𑚷𑚶𑚸𑚹𑚺𑚻𑚼𑚽𑚾𑚿𑛀𑛁𑛂𑛃𑛄𑛅𑛆𑛇𑛈𑛉𑛊𑛋𑛌𑛍𑛎𑛏𑛐𑛑𑛒𑛓𑛔𑛕𑛖𑛗𑛘𑛙𑛚𑛛𑛜𑛝𑛞𑛟𑛠𑛡𑛢𑛣𑛤𑛥𑛦𑛧𑛨𑛩𑛪𑛫𑛬𑛭𑛮𑛯𑛰𑛱𑛲𑛳𑛴𑛵𑛶𑛷𑛸𑛹𑛺𑛻𑛼𑛽𑛾𑛿𑜀𑜁𑜂𑜃𑜄𑜅𑜆𑜇𑜈𑜉𑜊𑜋𑜌𑜍𑜎𑜏𑜐𑜑𑜒𑜓𑜔𑜕𑜖𑜗𑜘𑜙𑜚𑜛𑜜𑜝𑜞𑜟𑜠𑜡𑜢𑜣𑜤𑜥𑜦𑜧𑜨𑜩𑜪𑜫𑜬𑜭𑜮𑜯𑜰𑜱𑜲𑜳𑜴𑜵𑜶𑜷𑜸𑜹𑜺𑜻𑜼𑜽𑜾𑜿𑝀𑝁𑝂𑝃𑝄𑝅𑝆𑝇𑝈𑝉𑝊𑝋𑝌𑝍𑝎𑝏𑝐𑝑𑝒𑝓𑝔𑝕𑝖𑝗𑝘𑝙𑝚𑝛𑝜𑝝𑝞𑝟𑝠𑝡𑝢𑝣𑝤𑝥𑝦𑝧𑝨𑝩𑝪𑝫𑝬𑝭𑝮𑝯𑝰𑝱𑝲𑝳𑝴𑝵𑝶𑝷𑝸𑝹𑝺𑝻𑝼𑝽𑝾𑝿𑞀𑞁𑞂𑞃𑞄𑞅𑞆𑞇𑞈𑞉𑞊𑞋𑞌𑞍𑞎𑞏𑞐𑞑𑞒𑞓𑞔𑞕𑞖𑞗𑞘𑞙𑞚𑞛𑞜𑞝𑞞𑞟𑞠𑞡𑞢𑞣𑞤𑞥𑞦𑞧𑞨𑞩𑞪𑞫𑞬𑞭𑞮𑞯𑞰𑞱𑞲𑞳𑞴𑞵𑞶𑞷𑞸𑞹𑞺𑞻𑞼𑞽𑞾𑞿𑟀𑟁𑟂𑟃𑟄𑟅𑟆𑟇𑟈𑟉𑟊𑟋𑟌𑟍𑟎𑟏𑟐𑟑𑟒𑟓𑟔𑟕𑟖𑟗𑟘𑟙𑟚𑟛𑟜𑟝𑟞𑟟𑟠𑟡𑟢𑟣𑟤𑟥𑟦𑟧𑟨𑟩𑟪𑟫𑟬𑟭𑟮𑟯𑟰𑟱𑟲𑟳𑟴𑟵𑟶𑟷𑟸𑟹𑟺𑟻𑟼𑟽𑟾𑟿𑠀𑠁𑠂𑠃𑠄𑠅𑠆𑠇𑠈𑠉𑠊𑠋𑠌𑠍𑠎𑠏𑠐𑠑𑠒𑠓𑠔𑠕𑠖𑠗𑠘𑠙𑠚𑠛𑠜𑠝𑠞𑠟𑠠𑠡𑠢𑠣𑠤𑠥𑠦𑠧𑠨𑠩𑠪𑠫𑠬𑠭𑠮𑠯𑠰𑠱𑠲𑠳𑠴𑠵𑠶𑠷𑠸𑠺𑠹𑠻𑠼𑠽𑠾𑠿𑡀𑡁𑡂𑡃𑡄𑡅𑡆𑡇𑡈𑡉𑡊𑡋𑡌𑡍𑡎𑡏𑡐𑡑𑡒𑡓𑡔𑡕𑡖𑡗𑡘𑡙𑡚𑡛𑡜𑡝𑡞𑡟𑡠𑡡𑡢𑡣𑡤𑡥𑡦𑡧𑡨𑡩𑡪𑡫𑡬𑡭𑡮𑡯𑡰𑡱𑡲𑡳𑡴𑡵𑡶𑡷𑡸𑡹𑡺𑡻𑡼𑡽𑡾𑡿𑢀𑢁𑢂𑢃𑢄𑢅𑢆𑢇𑢈𑢉𑢊𑢋𑢌𑢍𑢎𑢏𑢐𑢑𑢒𑢓𑢔𑢕𑢖𑢗𑢘𑢙𑢚𑢛𑢜𑢝𑢞𑢟𑢠𑢡𑢢𑢣𑢤𑢥𑢦𑢧𑢨𑢩𑢪𑢫𑢬𑢭𑢮𑢯𑢰𑢱𑢲𑢳𑢴𑢵𑢶𑢷𑢸𑢹𑢺𑢻𑢼𑢽𑢾𑢿𑣀𑣁𑣂𑣃𑣄𑣅𑣆𑣇𑣈𑣉𑣊𑣋𑣌𑣍𑣎𑣏𑣐𑣑𑣒𑣓𑣔𑣕𑣖𑣗𑣘𑣙𑣚𑣛𑣜𑣝𑣞𑣟𑣠𑣡𑣢𑣣𑣤𑣥𑣦𑣧𑣨𑣩𑣪𑣫𑣬𑣭𑣮𑣯𑣰𑣱𑣲𑣳𑣴𑣵𑣶𑣷𑣸𑣹𑣺𑣻𑣼𑣽𑣾𑣿𑤀𑤁𑤂𑤃𑤄𑤅𑤆𑤇𑤈𑤉𑤊𑤋𑤌𑤍𑤎𑤏𑤐𑤑𑤒𑤓𑤔𑤕𑤖𑤗𑤘𑤙𑤚𑤛𑤜𑤝𑤞𑤟𑤠𑤡𑤢𑤣𑤤𑤥𑤦𑤧𑤨𑤩𑤪𑤫𑤬𑤭𑤮𑤯𑤰𑤱𑤲𑤳𑤴𑤵𑤶𑤷𑤸𑤹𑤺𑤻𑤼𑤽𑤾𑤿𑥀𑥁𑥂𑥃𑥄𑥅𑥆𑥇𑥈𑥉𑥊𑥋𑥌𑥍𑥎𑥏𑥐𑥑𑥒𑥓𑥔𑥕𑥖𑥗𑥘𑥙𑥚𑥛𑥜𑥝𑥞𑥟𑥠𑥡𑥢𑥣𑥤𑥥𑥦𑥧𑥨𑥩𑥪𑥫𑥬𑥭𑥮𑥯𑥰𑥱𑥲𑥳𑥴𑥵𑥶𑥷𑥸𑥹𑥺𑥻𑥼𑥽𑥾𑥿𑦀𑦁𑦂𑦃𑦄𑦅𑦆𑦇𑦈𑦉𑦊𑦋𑦌𑦍𑦎𑦏𑦐𑦑𑦒𑦓𑦔𑦕𑦖𑦗𑦘𑦙𑦚𑦛𑦜𑦝𑦞𑦟𑦠𑦡𑦢𑦣𑦤𑦥𑦦𑦧𑦨𑦩𑦪𑦫𑦬𑦭𑦮𑦯𑦰𑦱𑦲𑦳𑦴𑦵𑦶𑦷𑦸𑦹𑦺𑦻𑦼𑦽𑦾𑦿𑧀𑧁𑧂𑧃𑧄𑧅𑧆𑧇𑧈𑧉𑧊𑧋𑧌𑧍𑧎𑧏𑧐𑧑𑧒𑧓𑧔𑧕𑧖𑧗𑧘𑧙𑧚𑧛𑧜𑧝𑧞𑧟𑧠𑧡𑧢𑧣𑧤𑧥𑧦𑧧𑧨𑧩𑧪𑧫𑧬𑧭𑧮𑧯𑧰𑧱𑧲𑧳𑧴𑧵𑧶𑧷𑧸𑧹𑧺𑧻𑧼𑧽𑧾𑧿𑨀𑨁𑨂𑨃𑨄𑨅𑨆𑨇𑨈𑨉𑨊𑨋𑨌𑨍𑨎𑨏𑨐𑨑𑨒𑨓𑨔𑨕𑨖𑨗𑨘𑨙𑨚𑨛𑨜𑨝𑨞𑨟𑨠𑨡𑨢𑨣𑨤𑨥𑨦𑨧𑨨𑨩𑨪𑨫𑨬𑨭𑨮𑨯𑨰𑨱𑨲𑨳𑨴𑨵𑨶𑨷𑨸𑨹𑨺𑨻𑨼𑨽𑨾𑨿𑩀𑩁𑩂𑩃𑩄𑩅𑩆𑩇𑩈𑩉𑩊𑩋𑩌𑩍𑩎𑩏𑩐𑩑𑩒𑩓𑩔𑩕𑩖𑩗𑩘𑩙𑩚𑩛𑩜𑩝𑩞𑩟𑩠𑩡𑩢𑩣𑩤𑩥𑩦𑩧𑩨𑩩𑩪𑩫𑩬𑩭𑩮𑩯𑩰𑩱𑩲𑩳𑩴𑩵𑩶𑩷𑩸𑩹𑩺𑩻𑩼𑩽𑩾𑩿𑪀𑪁𑪂𑪃𑪄𑪅𑪆𑪇𑪈𑪉𑪊𑪋𑪌𑪍𑪎𑪏𑪐𑪑𑪒𑪓𑪔𑪕𑪖𑪗𑪘𑪙𑪚𑪛𑪜𑪝𑪞𑪟𑪠𑪡𑪢𑪣𑪤𑪥𑪦𑪧𑪨𑪩𑪪𑪫𑪬𑪭𑪮𑪯𑪰𑪱𑪲𑪳𑪴𑪵𑪶𑪷𑪸𑪹𑪺𑪻𑪼𑪽𑪾𑪿𑫀𑫁𑫂𑫃𑫄𑫅𑫆𑫇𑫈𑫉𑫊𑫋𑫌𑫍𑫎𑫏𑫐𑫑𑫒𑫓𑫔𑫕𑫖𑫗𑫘𑫙𑫚𑫛𑫜𑫝𑫞𑫟𑫠𑫡𑫢𑫣𑫤𑫥𑫦𑫧𑫨𑫩𑫪𑫫𑫬𑫭𑫮𑫯𑫰𑫱𑫲𑫳𑫴𑫵𑫶𑫷𑫸𑫹𑫺𑫻𑫼𑫽𑫾𑫿𑬀𑬁𑬂𑬃𑬄𑬅𑬆𑬇𑬈𑬉𑬊𑬋𑬌𑬍𑬎𑬏𑬐𑬑𑬒𑬓𑬔𑬕𑬖𑬗𑬘𑬙𑬚𑬛𑬜𑬝𑬞𑬟𑬠𑬡𑬢𑬣𑬤𑬥𑬦𑬧𑬨𑬩𑬪𑬫𑬬𑬭𑬮𑬯𑬰𑬱𑬲𑬳𑬴𑬵𑬶𑬷𑬸𑬹𑬺𑬻𑬼𑬽𑬾𑬿𑭀𑭁𑭂𑭃𑭄𑭅𑭆𑭇𑭈𑭉𑭊𑭋𑭌𑭍𑭎𑭏𑭐𑭑𑭒𑭓𑭔𑭕𑭖𑭗𑭘𑭙𑭚𑭛𑭜𑭝𑭞𑭟𑭠𑭡𑭢𑭣𑭤𑭥𑭦𑭧𑭨𑭩𑭪𑭫𑭬𑭭𑭮𑭯𑭰𑭱𑭲𑭳𑭴𑭵𑭶𑭷𑭸𑭹𑭺𑭻𑭼𑭽𑭾𑭿𑮀𑮁𑮂𑮃𑮄𑮅𑮆𑮇𑮈𑮉𑮊𑮋𑮌𑮍𑮎𑮏𑮐𑮑𑮒𑮓𑮔𑮕𑮖𑮗𑮘𑮙𑮚𑮛𑮜𑮝𑮞𑮟𑮠𑮡𑮢𑮣𑮤𑮥𑮦𑮧𑮨𑮩𑮪𑮫𑮬𑮭𑮮𑮯𑮰𑮱𑮲𑮳𑮴𑮵𑮶𑮷𑮸𑮹𑮺𑮻𑮼𑮽𑮾𑮿𑯀𑯁𑯂𑯃𑯄𑯅𑯆𑯇𑯈𑯉𑯊𑯋𑯌𑯍𑯎𑯏𑯐𑯑𑯒𑯓𑯔𑯕𑯖</span>	

(घ) सांकेतिक चिह्नों या देवताओं की उपासना में प्रयुक्त त्रिकोण, चक्र आदि संकेतचिह्नों को "देवनागर" कहते थे। कालांतर में नाम के प्रथमाक्षरों का उनसे बोध होने लगा और जिस लिपि में उनको स्थान मिला- वह 'देवनागरी' या 'नागरी' कही गई। इन सब पक्षों के मूल में कल्पना का प्राधान्य है, निश्चयात्मक प्रमाण अनुपलब्ध हैं।

## इतिहास

मुख्य लेख : देवनागरी का इतिहास

भारत देवनागरी लिपि की क्षमता से शताब्दियों से परिचित रहा है।

डॉ. दवारिका प्रसाद सक्सेना के अनुसार सवप्रथम देवनागरी लिपि का प्रयोग गुजरात के नरेश जयभट्ट (700-800 ई.) के शिलालेख में मिलता है। आठवीं शताब्दी में चित्रकूट, नवीं में बड़ौदा के ध्वराज भी अपने राज्यादेशों में इस लिपि का उपयोग किया करते थे।

758 ई का राष्ट्रकूट राजा दन्तिदुर्ग का सागण्ड ताम्रपत्र मिलता है जिस पर देवनागरी अंकित है। शिलाहारवंश के गण्डरादित्य के उत्कीर्ण लेख की लिपि देवनागरी है। इसका समय ग्यारहवीं शताब्दी है। इसी समय के चोलराजा राजेन्द्र के सिक्के मिले हैं जिन पर देवनागरी लिपि अंकित है। राष्ट्रकूट राजा इंद्रराज (दसवीं शती) के लेख में भी देवनागरी का व्यवहार किया है। प्रतीहार राजा महेंद्रपाल (891-907) का दानपत्र भी देवनागरी लिपि में है।

कनिंघम की पुस्तक में सबसे प्राचीन मुसलमानों सिक्के के रूप में महमूद गजनवी द्वारा चलाये गए चांदी के सिक्के का वर्णन है जिस पर देवनागरी लिपि में संस्कृत अंकित है। मुहम्मद विनसाम (1192-1205) के सिक्कों पर लक्ष्मी की मूर्ति के साथ देवनागरी लिपि का व्यवहार हुआ है। शमशुद्दीन इल्तुतमिश (1210-1235) के सिक्कों पर भी देवनागरी अंकित है। सानुद्दीन फिरोजशाह प्रथम, जलालुद्दीन रजिया, बहराम शाह, अलालुद्दीन मरूदशाह, नसीरुद्दीन महमूद, मुईजुद्दीन, गयासुद्दीन बलवन, मुईजुद्दीन कैकबाद, जलालुद्दीन हीरो सानी, अलाउद्दीन महमूद शाह आदि ने अपने सिक्कों पर देवनागरी अक्षर अंकित किये हैं। अकबर के सिक्कों पर देवनागरी में 'राम' सिया का नाम अंकित है। गयासुद्दीन तुगलक, शेरशाह सूरी, इस्लाम शाह, मुहम्मद आदिलशाह, गयासुद्दीन इब्ज, गयासुद्दीन सानी आदि ने भी इसी परम्परा का पालन किया।

## भाषाविज्ञान की दृष्टि से देवनागरी

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से देवनागरी लिपि अक्षरात्मक (सिलेबिक) लिपि मानी जाती है। लिपि के विकाससोपानों की दृष्टि से "चित्रात्मक", "भावार्थक" और "भावचित्रात्मक" लिपियों के अनंतर "अक्षरात्मक" स्तर की लिपियाँ का विकास माना जाता है। प्राचीन और अनेक भारतीय भाषाविज्ञानविद्यों के मत से लिपि की अक्षरात्मक अवस्था के बाद अल्फाबेटिक (वर्णात्मक) अवस्था का विकास हुआ। सबसे विकसित अवस्था मानी गई है ध्वन्यात्मक (फोनेटिक) लिपि। "देवनागरी" को अक्षरात्मक इसलिए कहा जाता है कि इसके वर्ण- अक्षर (सिलेबल) हैं- स्वर भी और व्यंजन भी। "क", "ख" आदि व्यंजन सस्वर हैं- अकारयुक्त हैं। वे केवल ध्वनियाँ नहीं हैं अपितु सस्वर अक्षर हैं। अतः गीक, रोमन आदि वर्णमालाएँ हैं। परंतु यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि भारत की "ब्राह्मी" या "भारती" वर्णमाला की ध्वनियाँ में व्यंजनों का "पाणिनि" ने वर्णसामान्याय के १५ सूत्रों में जो वर्णसम्पर परिचय दिया है- उसके विषय में "पतञ्जलि" (द्वितीय ई. पू.) ने यह ध्यान रखा कि व्यंजनों में संनियोजित "अक्षर" स्वर का उपयोग केवल उच्चारण के उद्देश्य से है। वह तत्त्वतः वर्ण का अंग नहीं है। इस दृष्टि से विचार करते हुए कहा जा सकता है कि इस लिपि की वर्णमाला तत्त्वतः ध्वन्यात्मक है, अक्षरात्मक नहीं।

## देवनागरी वर्णमाला

देवनागरी की वर्णमाला में १२ स्वर और ३४ व्यंजन हैं। शून्य या एक या अधिक व्यंजनों और एक स्वर के मेल से एक अक्षर बनता है।



वाराणसी में देवनागरी लिपि में लिखे विज्ञापन



मुम्बई के सार्वजनिक यातायात के टिकट पर देवनागरी

निम्नलिखित स्वर आधुनिक हिन्दी (खड़ी बोली) के लिये दिये गये हैं। संस्कृत में इनके उच्चारण थोड़े अलग होते हैं।

वर्णाक्षर	“प” के साथ मात्रा	IPA उच्चारण	"प्" के साथ उच्चारण	IAST समतुल्य	हिन्दी में वर्णन
अ	प	<span>/ə/</span>	<span>/pə/</span>	a	बीच का मध्य प्रसृत स्वर
आ	पा	<span>/ɑː/</span>	<span>/pɑː/</span>	ā	दीर्घ विवृत पश्व प्रसृत स्वर
इ	पि	<span>/i/</span>	<span>/pi/</span>	i	ह्रस्व संवृत अग्र प्रसृत स्वर
ई	पी	<span>/iː/</span>	<span>/piː/</span>	ī	दीर्घ संवृत अग्र प्रसृत स्वर
उ	पु	<span>/u/</span>	<span>/pu/</span>	u	ह्रस्व संवृत पश्व वर्तुल स्वर
ऊ	पू	<span>/uː/</span>	<span>/puː/</span>	ū	दीर्घ संवृत पश्व वर्तुल स्वर
ए	पे	<span>/e/</span>	<span>/pe/</span>	e	दीर्घ अर्धसंवृत अग्र प्रसृत स्वर
ऐ	पै	<span>/æː/</span>	<span>/pæː/</span>	ai	दीर्घ लगभग-विवृत अग्र प्रसृत स्वर
ओ	पो	<span>/oː/</span>	<span>/poː/</span>	o	दीर्घ अर्धसंवृत पश्व वर्तुल स्वर
औ	पौ	<span>/ɔː/</span>	<span>/pɔː/</span>	au	दीर्घ अर्धविवृत पश्व वर्तुल स्वर
<कुछ भी नहीं>	<कुछ भी नहीं>	<span>/ɛ/</span>	<span>/pɛ/</span>	<कुछ भी नहीं>	ह्रस्व अर्धविवृत अग्र प्रसृत स्वर

संस्कृत में ऐ दो स्वरों का युग्म होता है और "अ-इ" या "आ-इ" की तरह बोला जाता है। इसी तरह औ "अ-उ" या "आ-उ" की तरह बोला जाता है।

इसके अलावा हिन्दी और संस्कृत में ये वर्णाक्षर भी स्वर माने जाते हैं :

- ऋ -- आधुनिक हिन्दी में "रि" की तरह
- ॠ -- केवल संस्कृत में
- ऌ -- केवल संस्कृत में
- ॡ -- केवल संस्कृत में
- अं -- आधे न्, म्, ं, ण् के लिये या स्वर का नासिकीकरण करने के लिये
- अँ -- स्वर का नासिकीकरण करने के लिये
- अः -- अघोष "ह्" (निःश्वास) के लिये
- एँ और औँ -- अर्धचंद्र इसका उपयोग अंग्रेजी शब्दों का मराठी और हिंदी मे परिपूर्ण उच्चारण तथा लेखन करने के लिये किया जाता है।

व्यंजन

जब किसी स्वर प्रयोग नहीं हो, तो वहाँ पर 'अ' (अर्थात श्वा का स्वर) माना जाता है। स्वर के न होने को हलन्त अथवा विराम से दर्शाया जाता है। जैसे कि क् ख् ग् घ् ।

स्पर्श (Plosives)

	अल्पप्राण अघोष	महाप्राण अघोष	अल्पप्राण घोष	महाप्राण घोष	नासिक्य
कण्ठ्य	क / kə /	ख / kʰə /	ग / gə /	घ / gʱə /	ङ / ŋə /
तालव्य	च / cə / या/ tʃə /	छ / cʰə / या/ tʃʰə/	ज / jə / या/ dʒə /	झ / jʱə / या/ dʒʱə /	ञ / ɟə /
मूर्धन्य	ट / tə /	ठ / tʰə /	ड / də /	ढ / dʱə /	ण / ɳə /
दन्त्य	त / t̪ə /	थ / t̪ʰə /	द / d̪ə /	ध / d̪ʱə /	न / nə /
ओष्ठ्य	प / pə /	फ / pʰə /	ब / bə /	भ / bʱə /	म / mə /

स्पर्शरहित (Non-Plosives)

	तालव्य	मूर्धन्य	दन्त्य/ वत्स्य	कण्ठोष्ठ्य/ काकल्य
अन्तस्थ	य / jə /	र / rə /	ल / lə /	व / və /
ऊष्म/ संघर्षी	श / ʃə /	ष / ʂə /	स / sə /	ह / hə / या/ ȟə /

नोट करें -

- इनमें से ळ (मूर्धन्य पार्विक अन्तस्थ) एक अतिरिक्त व्यंजन है जिसका प्रयोग हिन्दी में नहीं होता है। मराठी और वैदिक संस्कृत में सभी का प्रयोग किया जाता है।
- संस्कृत में ष का उच्चारण ऐसे होता था : जीभ की नोक को मूर्धा (मुँह की छत) की ओर उठाकर श जैसी आवाज़ करना। शुक्ल यजुर्वेद की माध्यंदिनि शाखा में कुछ वाक्यात में ष का उच्चारण ख की तरह करना मान्य था। आधुनिक हिन्दी में ष का उच्चारण पूरी तरह श की तरह होता है।

- हिन्दी में ण का उच्चारण ज़्यादातर ङ़ की तरह होता है, यानि कि जीभ मुँह की छत को एक ज़ोरदार ठोकर मारती है। हिन्दी में क्षणिक और क्शङ्किक में कोई फ़र्क नहीं। पर संस्कृत में ण का उच्चारण न की तरह बिना ठोकर मारे होता था, अन्तर केवल इतना कि जीभ ण के समय मुँह की छत को छूती है।

नुक्ता वाले व्यंजन

हिन्दी भाषा में मुख्यतः अरबी और फ़ारसी भाषाओं से आये शब्दों को देवनागरी में लिखने के लिये कुछ वर्णों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) लगे वर्णों का प्रयोग किया जाता है (जैसे क़, ज़ आदि)। किन्तु हिन्दी में भी अधिकांश लोग नुक्तों का प्रयोग नहीं करते। इसके अलावा संस्कृत, मराठी, नेपाली एवं अन्य भाषाओं को देवनागरी में लिखने में भी नुक्तों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

वर्णाक्षर (IPA उच्चारण)	उदाहरण	वर्णन	अंग्रेज़ी में वर्णन	ग़लत उच्चारण
क़ (/ q /)	क़त्ल	अघोष अलिजिह्वीय स्पर्श	Voiceless uvular stop	क (/ k /)
ख़ (/ x or χ /)	ख़ास	अघोष अलिजिह्वीय या कण्ठ्य संघर्षी	Voiceless uvular or velar fricative	ख (/ kʰ /)
ग़ (/ ɣ or ɣ /)	ग़ैर	घोष अलिजिह्वीय या कण्ठ्य संघर्षी	Voiced uvular or velar fricative	ग (/ g /)
फ़ (/ f /)	फ़र्क	अघोष दन्त्यौष्ठ्य संघर्षी	Voiceless labio-dental fricative	फ (/ pʰ /)
ज़ (/ z /)	ज़ालिम	घोष वत्स्य संघर्षी	Voiced alveolar fricative	ज (/ dʒ /)
झ़ (/ ʒ /)	टेलेवीज़न	घोष तालव्य संघर्षी	Voiced palatal fricative	ज (/ dʒ /)
श् (/ θ /)	अश्नु	अघोष दन्त्य संघर्षी	Voiceless dental fricative	थ (/ tʰ /)
ड़ (/ ɽ /)	पेड़	अल्पप्राण मूर्धन्य उत्क्षिप्त	Unaspirated retroflex flap	-
ढ़ (/ ɽʰ /)	पढ़ना	महाप्राण मूर्धन्य उत्क्षिप्त	Aspirated retroflex flap	-

श् का प्रयोग मुख्यतः पहाड़ी भाषाओं में होता है जैसे की डोगरी (की उत्तरी उपभाषाओं) में "आंसू" के लिए शब्द है "अश्नु"। हिन्दी में ड़ और ढ़ व्यंजन फ़ारसी या अरबी से नहीं लिये गये हैं, न ही ये संस्कृत में पाये जाये हैं। असल में ये संस्कृत के साधारण ड और ढ के बदले हुए रूप हैं।

विराम-चिह्न, वैदिक चिह्न आदि

प्रतीक	नाम	कार्य
।	इण्डा / खड़ी पाई / पूर्ण विराम	वाक्य का अन्त बताने के लिये
॥	दोहरा इण्डा	
.		संक्षिप्तीकरण के लिये, जैसे मो. क. गाँधी
ॐ	प्रणव , ओम	हिन्दू धर्म का शुभ शब्द
पं	उदात्त	उच्चारण बताने के लिये वैदिक संस्कृत के कुछ ग्रन्थों में प्रयुक्त
पु	अनुदात्त	उच्चारण बताने के लिये वैदिक संस्कृत के कुछ ग्रन्थों में प्रयुक्त

देवनागरी अंक

देवनागरी अंक निम्न रूप में लिखे जाते हैं :

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

देवनागरी संयुक्ताक्षर

देवनागरी लिपि में दो व्यंजन का संयुक्ताक्षर निम्न रूप में लिखा जाता है :

	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र
क	कक	कख	कग	कघ	कङ	कच	कछ	कज	कझ	कञ	कट	कठ	कड	कढ	कण	<u>कत</u>	कथ	कद	कध	कन	कप	कफ	कब	कभ	कम	कय	कर
ख	खक	खख	खग	खघ	खङ	खच	खछ	खज	खझ	खञ	खट	खठ	खड	खढ	खण	खत	खथ	खद	खध	खन	खप	खफ	खब	खभ	खम	खय	खर
ग	गक	गख	गग	गघ	गङ	गच	गछ	गज	गझ	गञ	गट	गठ	गड	गढ	गण	गत	गथ	गद	गध	गन	गप	गफ	गब	गभ	गम	गय	गर
घ	घक	घख	घग	घघ	घङ	घच	घछ	घज	घझ	घञ	घट	घठ	घड	घढ	घण	घत	घथ	घद	घध	घन	घप	घफ	घब	घभ	घम	घय	घर
ङ	ङक	ङख	ङग	ङघ	ङङ	ङच	ङछ	ङज	ङझ	ङञ	ङट	ङठ	ङड	ङढ	ङण	ङत	ङथ	ङद	ङध	ङन	ङप	ङफ	ङब	ङभ	ङम	ङय	ङर
च	चक	चख	चग	चघ	चङ	चच	चछ	चज	चझ	चञ	चट	चठ	चड	चढ	चण	चत	चथ	चद	चध	चन	चप	चफ	चब	चभ	चम	चय	चर
छ	छक	छख	छग	छघ	छङ	छच	छछ	छज	छझ	छञ	छट	छठ	छड	छढ	छण	छत	छथ	छद	छध	छन	छप	छफ	छब	छभ	छम	छय	छर
ज	जक	जख	जग	जघ	जङ	जच	जछ	जज	जझ	<u>ज</u>	जट	जठ	जड	जढ	जण	जत	जथ	जद	जध	जन	जप	जफ	जब	जभ	जम	जय	जर
झ	झक	झख	झग	झघ	झङ	झच	झछ	झज	झझ	झञ	झट	झठ	झड	झढ	झण	झत	झथ	झद	झध	झन	झप	झफ	झब	झभ	झम	झय	झर
ञ	ङक	ङख	ङग	ङघ	ङङ	ङच	ङछ	ङज	ङझ	ङञ	ङट	ङठ	ङड	ङढ	ङण	ङत	ङथ	ङद	ङध	ङन	ङप	ङफ	ङब	ङभ	ङम	ङय	ङर
ट	टक	टख	टग	टघ	टङ	टच	टछ	टज	टझ	टञ	<u>ट</u>	<u>ठ</u>	टड	टढ	टण	टत	टथ	टद	टध	टन	टप	टफ	टब	टभ	टम	टय	टर
ठ	ठक	ठख	ठग	ठघ	ठङ	ठच	ठछ	ठज	ठझ	ठञ	ठट	<u>ठ</u>	ठड	ठढ	ठण	ठत	ठथ	ठद	ठध	ठन	ठप	ठफ	ठब	ठभ	ठम	ठय	ठर
ड	डक	डख	डग	डघ	डङ	डच	डछ	डज	डझ	डञ	डट	डठ	डड	डढ	डण	डत	डथ	डद	डध	डन	डप	डफ	डब	डभ	डम	डय	डर
ढ	ढक	ढख	ढग	ढघ	ढङ	ढच	ढछ	ढज	ढझ	ढञ	ढट	ढठ	ढड	ढढ	ढण	ढत	ढथ	ढद	ढध	ढन	ढप	ढफ	ढब	ढभ	ढम	ढय	ढर
ण	णक	णख	णग	णघ	णङ	णच	णछ	णज	णझ	णञ	णट	णठ	णड	णढ	णण	णत	णथ	णद	णध	णन	णप	णफ	णब	णभ	णम	णय	णर
त	तक	तख	तग	तघ	तङ	तच	तछ	तज	तझ	तञ	तट	तठ	तड	तढ	तण	<u>त</u>	तथ	तद	तध	तन	तप	तफ	तब	तभ	तम	तय	तर
थ	थक	थख	थग	थघ	थङ	थच	थछ	थज	थझ	थञ	थट	थठ	थड	थढ	थण	थत	थथ	थद	थध	थन	थप	थफ	थब	थभ	थम	थय	थर
द	दक	दख	दग	दघ	दङ	दच	दछ	दज	दझ	दञ	दट	दठ	दड	दढ	दण	दत	दथ	<u>द</u>	<u>ध</u>	दन	दप	दफ	<u>दब</u>	<u>दभ</u>	<u>दम</u>	<u>दय</u>	दर
ध	धक	धख	धग	धघ	धङ	धच	धछ	धज	धझ	धञ	धट	धठ	धड	धढ	धण	धत	धथ	धद	धध	धन	धप	धफ	धब	धभ	धम	धय	धर
न	नक	नख	नग	नघ	नङ	नच	नछ	नज	नझ	नञ	नट	नठ	नड	नढ	नण	नत	नथ	नद	नध	नन	नप	नफ	नब	नभ	नम	नय	नर
प	पक	पख	पग	पघ	पङ	पच	पछ	पज	पझ	पञ	पट	पठ	पड	पढ	पण	पत	पथ	पद	पध	पन	पप	पफ	पब	पभ	पम	पय	पर
फ	फक	फख	फग	फघ	फङ	फच	फछ	फज	फझ	फञ	फट	फठ	फड	फढ	फण	फत	फथ	फद	फध	फन	फप	फफ	फब	फभ	फम	फय	फर
ब	बक	बख	बग	बघ	बङ	बच	बछ	बज	बझ	बञ	बट	बठ	बड	बढ	बण	बत	बथ	बद	बध	बन	बप	बफ	बब	बभ	बम	बय	बर
भ	भक	भख	भग	भघ	भङ	भच	भछ	भज	भझ	भञ	भट	भठ	भड	भढ	भण	भत	भथ	भद	भध	भन	भप	भफ	भब	भभ	भम	भय	भर
म	मक	मख	मग	मघ	मङ	मच	मछ	मज	मझ	मञ	मट	मठ	मड	मढ	मण	मत	मथ	मद	मध	मन	मप	मफ	मब	मभ	मम	मय	मर
य	यक	यख	यग	यघ	यङ	यच	यछ	यज	यझ	यञ	यट	यठ	यड	यढ	यण	यत	यथ	यद	यध	यन	यप	यफ	यब	यभ	यम	यय	यर
र	रक	रख	रग	रघ	रङ	रच	रछ	रज	रझ	रञ	रट	रठ	रड	रढ	रण	रत	रथ	रद	रध	रन	रप	रफ	रब	रभ	रम	रय	रर
ल	लक	लख	लग	लघ	लङ	लच	लछ	लज	लझ	लञ	लट	लठ	लड	लढ	लण	लत	लथ	लद	लध	लन	लप	लफ	लब	लभ	लम	लय	लर
व	वक	वख	वग	वघ	वङ	वच	वछ	वज	वझ	वञ	वट	वठ	वड	वढ	वण	वत	वथ	वद	वध	वन	वप	वफ	वब	वभ	वम	वय	वर
श	शक	शख	शग	शघ	शङ	शच	शछ	शज	शझ	शञ	शट	शठ	शड	शढ	शण	शत	शथ	शद	शध	शन	शप	शफ	शब	शभ	शम	शय	<u>श</u>
ष	षक	षख	षग	षघ	षङ	षच	षछ	षज	षझ	षञ	षट	षठ	षड	षढ	षण	षत	षथ	षद	षध	षन	षप	षफ	षब	षभ	षम	षय	षर
स	सक	सख	सग	सघ	सङ	सच	सछ	सज	सझ	सञ	सट	सठ	सड	सढ	सण	सत	सथ	सद	सध	सन	सप	सफ	सब	सभ	सम	सय	सर
ह	हक	हख	हग	हघ	हङ	हच	हछ	हज	हझ	हञ	हट	हठ	हड	हढ	हण	हत	हथ	हद	हध	हन	हप	हफ	हब	हभ	<u>हम</u>	<u>हय</u>	हर
ळ	ळक	ळख	ळग	ळघ	ळङ	ळच	ळछ	ळज	ळझ	ळञ	ळट	ळठ	ळड	ळढ	ळण	ळत	ळथ	ळद	ळध	ळन	ळप	ळफ	ळब	ळभ	ळम	ळय	ळर

ब्राह्मी परिवार की लिपियों में देवनागरी लिपि सबसे अधिक संयुक्ताक्षरों को समर्थन देती है। देवनागरी २ से अधिक व्यंजनों के संयुक्ताक्षर को भी समर्थन देती है। छन्दस फॉण्ट देवनागरी में बहुत संयुक्ताक्षरों को समर्थन देता है।

पुरानी देवनागरी

पुराने समय में प्रयुक्त हुई जाने वाली देवनागरी के कुछ वर्ण आधुनिक देवनागरी से भिन्न हैं।

आधुनिक देवनागरी	पुरानी देवनागरी
अ	अ़
इ	इ़
ण	ण़
ल	ल़



द+ध+र+य+अ संयुक्ताक्षर

देवनागरी लिपि के गुण

- भारतीय भाषाओं के लिये वर्णों की पूर्णता एवं सम्पन्नता (५२ वर्ण, न बहुत अधिक न बहुत कम)।
- एक ध्वनि के लिये एक सांकेतिक चिह्न -- जैसा बोलें वैसा लिखें।
- एक सांकेतिक चिह्न द्वारा केवल एक ध्वनि का निरूपण -- जैसा लिखें वैसा पढ़ें।

उपरोक्त दोनों गुणों के कारण ब्राह्मी लिपि का उपयोग करने वाली सभी भारतीय भाषाएँ 'स्पेलिंग की समस्या' से मुक्त हैं।

- **स्वर और व्यंजन में तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक क्रम-विन्यास** - देवनागरी के वर्णों का क्रमविन्यास उनके उच्चारण के स्थान (ओष्ठ्य, दन्त्य, तालव्य, मूर्धन्य आदि) को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। इसके अतिरिक्त वर्ण-क्रम के निर्धारण में भाषा-विज्ञान के कई अन्य पहलुओं का भी ध्यान रखा गया है। देवनागरी की वर्णमाला (वास्तव में, ब्राह्मी से उत्पन्न सभी लिपियों की वर्णमालाएँ) एक अत्यन्त तर्कपूर्ण ध्वन्यात्मक क्रम (phonetic order) में व्यवस्थित है। यह क्रम इतना तर्कपूर्ण है कि अन्तरराष्ट्रीय ध्वन्यात्मक संघ (IPA) ने अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला के निर्माण के लिये मामूली परिवर्तनों के साथ इसी क्रम को अंगीकार कर लिया।
- **वर्णों का प्रत्याहार रूप में उपयोग** : माहेश्वर सूत्र में देवनागरी वर्णों को एक विशिष्ट क्रम में सजाया गया है। इसमें से किसी वर्ण से आरम्भ करके किसी दूसरे वर्ण तक के वर्णसमूह को दो अक्षर का एक छोटा नाम दे दिया जाता है जिसे 'प्रत्याहार' कहते हैं। प्रत्याहार का प्रयोग करते हुए सन्धि आदि के नियम अत्यन्त सरल और संक्षिप्त ढंग से दिए गये हैं (जैसे, *आद् गुणः*)
- देवनागरी लिपि के वर्णों का उपयोग संख्याओं को निरूपित करने के लिये किया जाता रहा है। (देखिये कटपयादि, भूतसंख्या तथा आर्यभट्ट की संख्यापद्धति)
- **मात्राओं की संख्या के आधार पर छन्दों का वर्गीकरण** : यह भारतीय लिपियों की अद्भुत विशेषता है कि किसी पद्य के लिखित रूप से मात्राओं और उनके क्रम को गिनकर बताया जा सकता है कि कौन सा छन्द है। रोमन, अरबी एवं अन्य में यह गुण अप्राप्य है।
- **उच्चारण और लेखन में एकरूपता**
- **लिपि चिह्नों के नाम और ध्वनि में कोई अन्तर नहीं** (जैसे रोमन में अक्षर का नाम "बी" है और ध्वनि "ब" है)
- **लेखन और मुद्रण में एकरूपता** (रोमन, अरबी और फ़ारसी में हस्तलिखित और मुद्रित रूप अलग-अलग हैं)
- देवनागरी, 'स्माल लेटर' और 'कैपिटल लेटर' की अवैज्ञानिक व्यवस्था से मुक्त है।
- **मात्राओं का प्रयोग**



देवनागरी के वर्णों के वर्गीकरण की तालिका

क का कि की कु कू कृ कृ के कै को कौ

क के उपर विभिन्न मात्राएं लगाने के बाद का स्वरूप

- **अर्ध-अक्षर के रूप की सुगमता** : खड़ी पाई को हटाकर - दायें से बायें क्रम में लिखकर तथा अर्द्ध अक्षर को ऊपर तथा उसके नीचे पूर्ण अक्षर को लिखकर - ऊपर नीचे क्रम में संयुक्ताक्षर बनाने की दो प्रकार की रीति प्रचलित है।
- **अन्य** - बायें से दायें, शिरोरेखा, संयुक्ताक्षरों का प्रयोग, अधिकांश वर्णों में एक उर्ध्व-रेखा की प्रधानता, अनेक ध्वनियों को निरूपित करने की क्षमता आदि।<sup>[1]</sup>
- भारतवर्ष के साहित्य में कुछ ऐसे रूप विकसित हुए हैं जो दायें-से-बायें अथवा बायें-से-दायें पढ़ने पर समान रहते हैं। उदाहरणस्वरूप केशवदास का एक सवैया लीजिये :

मां सस मोह सजै बन बीन, नवीन बजै सह मोस समा।  
मार लतानि बनावति सारि, रिसाति वनाबनि ताल रमा ॥  
  
मानव ही रहि मोरद मोद, दमोदर मोहि रही वनमा।  
माल बनी बल केसबदास, सदा बसकेल बनी बलमा ॥

इस सवैया की किसी भी पंक्ति को किसी ओर से भी पढिये, कोई अंतर नही पड़ेगा।

सदा सील तुम सरद के दरस हर तरह खास।

*सखा हर तरह सरद के सर सम तुलसीदास॥*

देवनागरी लिपि के दोष

1.कुल मिलाकर 403 टाइप होने के कारण टंकण, मुद्रण में कठिनाई। 2.शिरोरेखा का प्रयोग अनावश्यक अलंकरण के लिए। 3.अनावश्यक वर्ण (ऋ, ॠ, लृ, लॄ, ँ, ं, ष)– आज इन्हें कोई शुद्ध उच्चारण के साथ उच्चारित नहीं कर पाता। 4.द्विरूप वर्ण (ं प्र अ, ज, क्ष, त, त्र, छ, झ, रा ण, श) 5.समरूप वर्ण (ख में र व का, घ में ध का, म में भ का भ्रम होना)। 6.वर्णों के संयुक्त करने की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं। 7.अनुस्वार एवं अनुनासिकता के प्रयोग में एकरूपता का अभाव। 8.त्वरारपूर्ण लेखन नहीं क्योंकि लेखन में हाथ बार–बार उठाना पड़ता है। 9.वर्णों के संयुक्तीकरण में र के प्रयोग को लेकर भ्रम की स्थिति। 10.इ की मात्रा (ि) का लेखन वर्ण के पहले पर उच्चारण वर्ण के बाद।

देवनागरी पर महापुरुषों के विचार

आचार्य विनोबा भावे संसार की अनेक लिपियों के जानकार थे। उनकी स्पष्ट धारणा थी कि देवनागरी लिपि भारत ही नहीं, संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। अगर भारत की सब भाषाओं के लिए इसका व्यवहार चल पड़े तो सारे भारतीय एक दूसरे के बिल्कुल नजदीक आ जाएंगे। हिंदुस्तान की एकता में देवनागरी लिपि हिंदी से ही अधिक उपयोगी हो सकती है। अनन्त शयनम् अयंगर तो दक्षिण भारतीय भाषाओं के लिए भी देवनागरी की संभावना स्वीकार करते थे। सेठ गोविन्ददास इसे राष्ट्रीय लिपि घोषित करने के पक्ष में थे।

- (१) हिन्दुस्तान की एकता के लिये हिन्दी भाषा जितना काम देगी, उससे बहुत अधिक काम देवनागरी लिपि दे सकती है।

— आचार्य विनोबा भावे

- (२) देवनागरी किसी भी लिपि की तुलना में अधिक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित लिपि है।

— सर विलियम जोन्स

- (३) मानव मस्तिष्क से निकली हुई वर्णमालाओं में नागरी सबसे अधिक पूर्ण वर्णमाला है।

— जान क्राइस्ट

- (४) उर्दू लिखने के लिये देवनागरी लिपि अपनाने से उर्दू उत्कर्ष को प्राप्त होगी।

— खुशवन्त सिंह

- (५) The Devanagari alphabet is a splendid monument of phonological accuracy, in the sciences of language.

— मोहन लाल विद्यार्थी - Indian Culture Through the Ages, p. 61

- (६) एक सर्वमान्य लिपि स्वीकार करने से भारत की विभिन्न भाषाओं में जो ज्ञान का भंडार भरा है उसे प्राप्त करने का एक साधारण व्यक्ति को सहज ही अवसर प्राप्त होगा। हमारे लिए यदि कोई सर्व-मान्य लिपि स्वीकार करना संभव है तो वह देवनागरी है।

— एम.सी.छागला


- (७) प्राचीन भारत के महत्तम उपलब्धियों में से एक उसकी विलक्षण वर्णमाला है जिसमें प्रथम स्वर आते हैं और फिर व्यंजन जो सभी उत्पत्ति क्रम के अनुसार अत्यंत वैज्ञानिक ढंग से वर्गीकृत किये गए हैं। इस वर्णमाला का अविचारित रूप से वर्गीकृत तथा अपर्याप्त रोमन वर्णमाला से, जो तीन हजार वर्षों से क्रमशः विकसित हो रही थी, पर्याप्त अंतर है।

— ए एल बाशम, "द वंडर दैट वाज इंडिया" के लेखक और इतिहासविद्

भारत के लिये देवनागरी का महत्व

मुख्य लेख : भारत के लिये देवनागरी का महत्व

विश्वलिपि के रूप में देवनागरी




**इस लेख की निष्पक्षता विवादित है।**

कृपया इसके वार्ता पृष्ठ पर चर्चा देखें।

बौद्ध संस्कृति से प्रभावित क्षेत्र नागरी के लिए नया नहीं है। चीन और जापान चित्रलिपि का व्यवहार करते हैं। इन चित्रों की संख्या बहुत अधिक होने के कारण भाषा सीखने में बहुत कठिनाई होती है। देववाणी की वाहिका होने के नाते देवनागरी भारत की सीमाओं से बाहर निकलकर चीन और जापान के लिए भी समुचित विकल्प दे सकती है। भारतीय मूल के लोग संसार में जहां-जहां भी रहते हैं, वे देवनागरी से परिचय रखते हैं, विशेषकर मारीशस, सूरीनाम, फिजी, गायना, त्रिनिदाद, टुबैगो आदि के लोग। इस तरह देवनागरी लिपि न केवल भारत के अंदर सारे प्रांतवासियों को प्रेम-बंधन में बांधकर सीमोल्लंघन कर दक्षिण-पूर्व एशिया के पुराने वृहत्तर भारतीय परिवार को भी 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' अनुप्राणित कर सकती है तथा विभिन्न देशों को एक अधिक सुचारु और वैज्ञानिक विकल्प प्रदान कर 'विश्व नागरी' की पदवी का दावा इक्कीसवीं सदी में कर सकती है। उस पर प्रसार लिपिगत साम्राज्यवाद और शोषण का माध्यम न होकर सत्य, अहिंसा, त्याग, संयम जैसे उदात्त मानवमूल्यों का संवाहक होगा, असत् से सत्, तमस् से ज्योति तथा मृत्यु से अमरता की दिशा में।

लिपि-विहीन भाषाओं के लिये देवनागरी



**इस लेख की निष्पक्षता विवादित है।**

कृपया इसके वार्ता पृष्ठ पर चर्चा देखें।

मुख्य लेख : लिपिविहीन भाषाओं के लिये देवनागरी

## देवनागरी की वैज्ञानिकता

विस्तृत लेख देवनागरी की वैज्ञानिकता देखें।

जिस प्रकार भारतीय अंकों को उनकी वैज्ञानिकता के कारण विश्व ने सहर्ष स्वीकार कर लिया वैसे ही देवनागरी भी अपनी वैज्ञानिकता के कारण ही एक दिन विश्वनागरी बनेगी।

## देवनागरी के सम्पादित्र व अन्य सॉफ्टवेयर

इंटरनेट पर हिन्दी के साधन देखिये।

## देवनागरी से अन्य लिपियों में रूपान्तरण

- ITRANS (iTrans) निरूपण, देवनागरी को लैटिन (रोमन) में परिवर्तित करने का आधुनिकतम और अक्षत (lossless) तरीका है। (Online Interface to iTrans (<http://www.aczoom.com/itrans/online/>))
- आजकल अनेक कम्प्यूटर प्रोग्राम उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से देवनागरी में लिखे पाठ को किसी भी भारतीय लिपि में बदला जा सकता है।
- कुछ ऐसे भी कम्प्यूटर प्रोग्राम हैं जिनकी सहायता से देवनागरी में लिखे पाठ को लैटिन, अरबी, चीनी, क्रिलिक, आईपीए (IPA) आदि में बदला जा सकता है। (ICU Transform Demo (<http://demo.icu-project.org/icu-bin/translit>))
- यूनिकोड के पदार्पण के बाद देवनागरी का रोमनीकरण (romanization) अब अनावश्यक होता जा रहा है। क्योंकि धीरे-धीरे कम्प्यूटर पर देवनागरी को (और अन्य लिपियों को भी) पूर्ण समर्थन मिलने लगा है।

## देवनागरी यूनिकोड

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	A	B	C	D	E	F
U+090x	□	ँ	ं	ः	ओ	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	एँ	ऐ	ए
U+091x	ऐ	ऑ	ओ	औ	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	
U+092x	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	न	प	फ	ब	भ	म	य
U+093x	र	र	ल	ळ	ळ	व	श	ष	स	ह	□	□	्	s	ा	ि
U+094x	ी	ु	ू	ृ	ृ	ँ	े	े	ै	ॉ	ो	ो	ौ	्	□	□
U+095x	ऊँ			े	े	□	□	□	क	ख	ग	ज	ङ	ढ	फ़	य
U+096x	ऋ	ॠ	ॡ	ॢ	।	॥	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
U+097x	.	.	अँ	□	□	□	□	□	□	□	□	ग़	ज़	?	इ	ब

## कम्प्यूटर कुंजीपटल पर देवनागरी



[2]

## सन्दर्भ

- History of Devanagari Letterforms ([http://www.dsource.in/resource/devanagari-letterforms-history/devanagari\\_letterforms/characteristics\\_of\\_devanagari.html](http://www.dsource.in/resource/devanagari-letterforms-history/devanagari_letterforms/characteristics_of_devanagari.html))
- Ram Narayan Ray

## इन्हें भी देखें

- देवनागरी वर्णमाला
- देवनागरी की वैज्ञानिकता
- नागरी प्रचारिणी सभा
- हन्टेरियन लिप्यन्तरण
- इंस्क्रिप्ट
- इस्की (ISCI)



- [नागरी संगम पत्रिका](#)
  - [नागरी एवं भारतीय भाषाएँ](#)
  - [गौरीदत्त - देवनागरी के महान प्रचारक](#)
  - [यूनिकोड](#)
  - [इण्डिक यूनिकोड](#)
  - [हिन्दी के साधन इंटरनेट पर](#)
- [ब्राह्मी लिपि](#)
  - [ब्राह्मी परिवार की लिपियाँ](#)
  - [भारतीय लिपियाँ](#)
  - [श्वा \(Schwa\)](#)
  - [सहस्वानिकी](#)
  - [भारतीय संख्या प्रणाली](#)

बाहरी कड़ियाँ

- [ब्राह्मी-लिपि परिवार का वृक्ष \(http://www.cs.colostate.edu/~malaiya/images/brah11.gif\)](http://www.cs.colostate.edu/~malaiya/images/brah11.gif) - इसमें ब्राह्मी से उत्पन्न लिपियों की समय-रेखा का चित्र दिया हुआ है।
- [पहलवी-ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न दक्षिण-पूर्व एशिया की लिपियों की समय-रेखा \(http://www.cs.colostate.edu/~malaiya/images/south1.gif\)](http://www.cs.colostate.edu/~malaiya/images/south1.gif)
- [राष्ट्रीय एकता की धरोहर : \*\*देवनागरी लिपि\*\* \(http://www.lakesparadise.com/madhumati/show-article\\_2069.html\)](http://www.lakesparadise.com/madhumati/show-article_2069.html)
- [सबने स्वीकारा है देवनागरी की वैज्ञानिकता को \(http://www.prabhasakshi.com/ShowArticle.aspx?ArticleId=090723-131027-440010\)](http://www.prabhasakshi.com/ShowArticle.aspx?ArticleId=090723-131027-440010) (प्रभासाक्षी)
- [देवनागरी का लंबा विकासात्मक इतिहास \(http://www.prabhasakshi.com/ShowArticle.aspx?ArticleId=120425-112232-440010\)](http://www.prabhasakshi.com/ShowArticle.aspx?ArticleId=120425-112232-440010) (प्रभासाक्षी)
- [राष्ट्रीय एकता की धरोहर : देवनागरी लिपि \(http://www.lakesparadise.com/madhumati/show-article\\_2069.html\)](http://www.lakesparadise.com/madhumati/show-article_2069.html) (मधुमती)
- [हर ढांचे में आसानी से ढल जाती है नागरी \(http://www.prabhasakshi.com/ShowArticle.aspx?ArticleId=120502-125738-440010\)](http://www.prabhasakshi.com/ShowArticle.aspx?ArticleId=120502-125738-440010) (डॉ. जुबैदा हाशिम मुल्ला ; 02 मई 2012)
- [Unicode Entity Codes for the Devanāgarī Script \(http://tlt.its.psu.edu/suggestions/international/bylanguage/devanagarichart.html\)](http://tlt.its.psu.edu/suggestions/international/bylanguage/devanagarichart.html)
- <http://www.ancientscripts.com/devanagari.html>
- <http://www.unicode.org/charts/PDF/U0900.pdf>
- [Language Independent Speech Compression using Devanagari Phonetics \(http://www.cs.jhu.edu/~habib/papers/LangIndPaper.pdf\)](http://www.cs.jhu.edu/~habib/papers/LangIndPaper.pdf)
- [राजभाषा हिन्दी \(http://books.google.co.in/books?id=j3umF2zqe\\_wC&printsec=frontcover#v=onepage&q=&f=false\)](http://books.google.co.in/books?id=j3umF2zqe_wC&printsec=frontcover#v=onepage&q=&f=false) (गूगल पुस्तक ; लेखक - भोलानाथ तिवारी)
- [अंग्रेजी भी देवनागरी में लिखें \(http://groups.google.co.in/group/technical-hindi/browse\\_thread/thread/c922140a950b0a53?hl=en\)](http://groups.google.co.in/group/technical-hindi/browse_thread/thread/c922140a950b0a53?hl=en)
- [Devanagari character picker v11 \(http://people.w3.org/rishida/scripts/pickers/devanagari/\)](http://people.w3.org/rishida/scripts/pickers/devanagari/)
- [The Influence of Sanskrit on the Japanese Sound System \(https://sites.google.com/site/sanskrtavak/home/resources/sa-ja\)](https://sites.google.com/site/sanskrtavak/home/resources/sa-ja) (James H. Buck, University of Georgia)
- [देवनागरी सॉफ्टवेयर \(http://kevincarmody.com/vedic/vedic.html#devnag\)](http://kevincarmody.com/vedic/vedic.html#devnag) (केविन कार्मोदी)
- [Sanskrit Lesson 3 – Sanskrit Alphabet and Devanagari Script \(http://www.hitxp.com/articles/sanskrit-lessons/science-alphabet-devanagari-script/\)](http://www.hitxp.com/articles/sanskrit-lessons/science-alphabet-devanagari-script/)
- [देवनागरी लिपि एवं संगणक \(http://www.academia.edu/3020947/Devanagari\\_lipi\\_Ora\\_sanganaka\)](http://www.academia.edu/3020947/Devanagari_lipi_Ora_sanganaka) (अम्बा कुलकर्णी, विभागाध्यक्ष ,संस्कृत अध्ययन विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय)

"<https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=देवनागरी&oldid=3697690>" से लिया गया

अन्तिम परिवर्तन 12:32, 3 फ़रवरी 2018।

यह सामग्री क्रियेटिव कॉमन्स [ऍट्रीब्यूशन/शेयर-अलाइक लाइसेंस](#) के तहत उपलब्ध है; अन्य शर्तें लागू हो सकती हैं। विस्तार से जानकारी हेतु देखें [उपयोग की शर्तें](#)